International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 159-162

जैन धर्म में महिलाओं की स्थिति

अमृता जैन*
डॉ. संध्या शर्मा**

सार

जैन धर्म विशेषकर भारतीय सांस्कृतिक भूमि पर समृद्धि कर रहा है, और इसमें स्त्री शिक्षा को लेकर एक विशेष दृष्टिकोण है। स्त्री शिक्षा की स्थिति जैन धर्म में उच्च मानी जाती है और इसे समाज के विभिन्न पहलुओं में आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है। जैन धर्म में स्त्रीयों को धार्मिक और सामाजिक शिक्षा का समान अधिकार है, और उन्हें धार्मिक ग्रंथों और तत्त्वों का शिक्षण दिया जाता है। यहां तक कि वीर या तीर्थंकर की उपासना और ध्यान में भी स्त्रीयों को समाहित किया गया है। जैन साहित्य में विभिन्न युगों में जैन साध्वियों और यतियों ने शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के माध्यम से स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया है। हालांकि, स्त्रीयों के पूजन, उनकी महत्ता को समझने में और उन्हें शिक्षित बनाने में भी जैन समुदाय अब भी चुनौती का सामना कर रहा है, लेकिन धार्मिक प्रवृत्तियों में सुधार की प्रक्रिया जारी है। समाप्त में, जैन धर्म ने स्त्री शिक्षा को समाज में समाहित करने के लिए कठिनाईयों का सामना किया है, लेकिन इसके प्रमाणों से प्रतिबद्ध है कि धार्मिक साहित्य और समुदाय उन्हें उच्चतम शिक्षा का हकदार मानते हैं और स्त्रीयों को समृद्धि, धर्म, और दान के क्षेत्र में सक्षम बनाने का समर्थन करते हैं।

शब्दकोशः *स्त्री शिक्षा, जैन धर्म, शिक्षा, जैनदर्शन।*

प्रस्तावना

धर्मों में जैन धर्म ने दुनिया को कुछ मौलिक विचारधाराएँ दी हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसने हमेशा जीवित प्राणियों में सबसे छोटे कीड़े–मकौड़ों का सम्मान किया है और यह रवैया निर्जीव दुनिया, घास के एक तिनके तक फैला हुआ है। एक वैध परिणाम के रूप में, पुरुषों के बीच समानता और जानवरों, कीड़ों और प्रकृति के साथ भाईचारा जैन विचारधारा की अनिवार्य विशेषता बन गया है। ऐसे धर्म के लिए महिलाओं के प्रति सम्मान का रवैया विकसित करना स्वाभाविक है। जिस समय जैन धर्म एक प्रमुख धर्म के रूप में उभरा, उस समय जातिवाद और वर्ग–द्वेष भी सर्वोच्च था। कुछ वर्ग या जातियाँ खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानती थीं और निम्न वर्ग उनसे बंधुआ मजदूर की तरह काम करवाते थे। जैन धर्म ने इस अमानवीय वर्ग भेद का विरोध किया और प्रत्येक मनुष्य के भीतर रहने वाली आत्मा का महिमामंडन किया। इसलिए, जाहिर है, इसने पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता पर जोर दिया। जैन धर्म ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर भागीदार माना, जो कि महिला को एक निम्न प्राणी के रूप में आम धारणा के विपरीत था।

* शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

महिलाऐं और जैन दर्शन

जैन धर्म में धार्मिक और सामाजिक कार्यों में स्त्री को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त हैं, इसलिए स्त्री को हीन मानना नितांत अज्ञानता होगी। जैन धर्म ने यह प्रतिपादित किया है कि जहां पुरुष जाता है, वहां स्त्री भी जा सकती हैय जो पुरुष करता है, वह स्त्री भी कर सकती है। स्त्री और पुरुष की उपलब्धियों को समान स्तर पर माना जाना चाहिए। धार्मिक उपलब्धियों और आत्मविकास के मामले शरीर से नहीं, बल्कि आत्मा से संबंधित हैं और लिंग भेद केवल भौतिक धरातल पर है। इस प्रकार स्त्री भी इच्छाओं, वासनाओं और कर्मों के बंधनों से मुक्त होकर समान रूप से मुक्ति प्राप्त कर सकती है। जैन धर्म ने बताया कि आध्यात्मिक धरातल पर जहां तक पुरुष और स्त्री की आत्मा का प्रश्न है, उनमें कोई अंतर या भेद नहीं है। इस प्रकार पुरुष द्वारा स्त्री को हीन मानना अतार्किक, अधार्मिक और अज्ञानतापूर्ण होगा। इस प्रकार जैन धर्म का स्त्री के प्रति दृष्टिकोण समानता की अवधारणा पर आधारित है। जैन धर्म मुक्ति की ओर उन्मुख है। यह अधिकतर त्याग, वैराग्य और मुक्ति के मूल्यों पर जोर देता है।

आम तौर पर, लगभग सभी धर्मों में जब भी वासना से मुक्ति की अवधारणा पर जोर दिया जाता है, तो स्त्री को छोटा समझा जाता है, क्योंकि वह वासना और शारीरिक इच्छाओं को जगाती है, और इसलिए उसे टाला जाना चाहिए या सुरक्षित दूरी पर रखा जाना चाहिए। लेकिन जैन धर्म में, दृष्टिकोण पूरी तरह से अलग है। ष्सूत्रकृतांग निर्युक्तिष् में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि जिस तरह एक महिला पुरुष के चरित्र को नष्ट करने के लिए उत्तरदायी है, उसी तरह एक पुरुष एक महिला के चरित्र को नष्ट कर सकता है। इसलिए, सांसारिक सुखों से विमुख महिलाओं को पुरुषों से खुद को बचाना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे पुरुषों को महिलाओं से खुद को बचाना चाहिए। जैन धर्म ने पुरुष–महिला संबंधों के कुछ गहरे पहलुओं की भी जांच की है। सूत्रकृतांग निर्युक्ति और चूर्णी में नारी शब्द के महत्व को पूरी तरह से समझाया गया है और महिला को द्रव्य स्त्री और भाव स्त्री के रूप में वर्गीकृत किया गया है। द्रव्य स्त्री का मतलब होगा एक महिला का शारीरिक गठन और भाव स्त्री का मतलब होगा उसका स्वभाव। इसी प्रकार उत्तराध्ययन चूर्णी, निशीथ चूर्णी तथा आचारंग चूर्णी में भी स्त्री स्वभाव का विशद वर्णन किया गया है। फिर तण्डुलवैचारिक प्रकीर्णक में स्त्रियों के लगभग 94 जन्मजात लक्षणों का वर्णन है। वास्तव में, कुछ स्थानों पर वर्णन अपमानजनक प्रतीत होता है, किन्तु श्भगवती आराधनाश में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि यह दोष वर्णन केवल साधारण स्त्रियों तथा पतिव्रता स्त्रियों के लिए ही लागू होता है, जबकि पतिव्रता स्त्रियों में ऐसी कोई कमी नहीं होती। इसके अलावा, स्त्रियों की प्रशंसा में इस ग्रंथ में उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार पतिव्रता स्त्री की महिमा सर्वत्र फैलती है तथा वह पृथ्वी पर देवी के समान है। उसकी पूजा देवता भी करते हैं तथा उसकी प्रशंसा के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं है। इसी कारण से जैन आगम में पत्नी को श्धम्मसहायश माना गया है – अर्थात धर्म में सहायता करने वाली।

जैन धर्म में स्त्रियों की भूमिका

स्त्रियों के लिए समानता की इस अवधारणा के परिणामस्वरूप जैन धर्म में स्त्रियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। स्त्रियों ने पुरुषों को प्रेरणा प्रदान करने की भूमिका भी निभाई है। हेमचंद्राचार्य की माता पाहिमी की प्रेरणा से ही उन्हें ज्ञान का सागर के रूप में ख्याति प्राप्त हुई, कवि धनपाल को उनकी बहन सुंदरी ने अमरकोश लिखने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार श्रीदेवी और अनुपमादेवी जैसी स्त्रियों ने अपने पतियों को धार्मिक कार्यों में धन व्यय करने की प्रेरणा दी। इस शताब्दी में भी अनेक साध्वियाँ और श्राविकाएँ हुई हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उच्च ख्याति अर्जित की है। महासती उज्ज्वलकुमारी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गांधीजी स्वयं उनसे मिलने गए थे। हरकुंवर सजेठानी ने विशाल भव्यता वाले हथिन्हा मंदिरों का निर्माण कराया और तीर्थयात्रियों के विशाल जुलूस का आयोजन कर अपनी प्रबंधन कुशलता का परिचय दिया। महात्तारा मृगावतीश्रीजी ने नई दिल्ली में वल्लभस्मारक के निर्माण की प्रेरणा दी। सरदाबाई मजासतीजी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाश्रीजी तथा अनेक साध्वीजी ने समाज को सार्थक मार्गदर्शन एवं नेतृत्व प्रदान किया है। साध्वियों एवं शर्विकाओं की इस सशक्त एवं सकारात्मक भूमिका के कारण ही अहिंसा के प्रति प्रतिबद्ध जैन धर्म ने मध्यकाल में प्रचलित श्सतीश प्रथा को स्वीकार नहीं

किया। इसी प्रकार दासी प्रथा–स्त्री दासता एवं स्त्रियों के व्यापार की प्रथा का भी कड़ा विरोध किया। दासी प्रथा को समृद्धि एवं प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। मेघकुमार की प्रसन्नता के लिए अनेक दासियाँ विभिन्न देशों से खरीदी गई थीं। किन्तु भगवान महावीर ने इस प्रथा का कड़ा विरोध किया। साध्वी यक्षकुंवरजी ने पशुबलि प्रथा को समाप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष किया। जैन धर्म मूलतः बहुविवाह, व्यभिचार, मद्यपान, वेश्यागमन एवं जुआ जैसे सात दुर्गुणों का विरोधी है। इस धर्म की स्त्रियाँ इन बुराइयों से होने वाली यातनाओं से बची रहती हैं। ज्ञात धर्मकथा में राजा द्रुपद द्रौपदी से अपने लिए पति चुनने को कहते हैं। उपासक दशांग में वर्णित अनुसार महाशतक अपनी पत्नी रेवती को धार्मिक आस्था, खान–पान तथा अन्य बातों के लिए किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करते। दूसरी ओर शर्वाकानंद की पत्नी के समान स्त्रियाँ बड़ी ही स्वेच्छा और प्रसन्नता से अपने पति के धर्म का पालन करती हैं तथा भगवान महावीर के उपासक व्रतों का पालन करती हैं। इस प्रकार आगम काल से ही स्त्रियों को धार्मिक आस्था और जीवन शैली के संबंध में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। साध्वियाँ साधुओं की संगति से स्वतंत्र होकर रहती–फिरती थीं तथा प्रतिहार–रक्षक के रूप में साध्वी नियुक्त करके अपनी सुरक्षा का प्रबंध स्वयं करती थीं। भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य व्रत की महिमा का बखान किया है तथा स्त्रियों को भी विवाहित जीवन पद्धति को त्यागकर ब्रह्मचर्य जीवन जीने की अनुमति दी है। ब्राह्मी, सुन्दरी माली, चन्दनबाला, जयन्ती आदि स्त्रियों ने विवाहित जीवन को अस्वीकार करके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। प्रचलित परम्पराओं और परिस्थितियों को देखते हुए उस समय स्त्रियों के लिए विवाहित जीवन जीना अपरिहार्य माना जाता था। किन्तु जैन धर्म ने विवाह जैसे व्यक्तिगत मुद्दे को स्त्रियों के विवेक पर छोड़ दिया है, स्त्री स्वयं निर्णय कर सकती है कि उसे विवाह करना है या नहीं। यदि उसे लगता है कि अविवाहित रहना उसके प्रभावी धार्मिक कार्यों के लिए अधिक अच्छा है, तो वह विवाह किए बिना ही दीक्षा लेने की अधिकारी थी। भगवान महावीर के समवसरण में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही स्वतंत्रता प्राप्त थी। वे बिना किसी रोक–टोक या प्रतिबन्ध के ऐसे समागमों में जाती थीं, प्रवचन सुनती थीं और सार्वजनिक रूप से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत करती थीं, जैसा कि जयन्ती के मामले में हुआ, जिसने प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान किया। इस प्रकार जैन धर्म में स्त्रियों की भूमिका समग्र रूप से बहुत ही प्रगतिशील और श्रेष्ठ रही है। माता के रूप में उन्होंने तीर्थंकरों को जन्म दिया है, पत्नी के रूप में उन्होंने अपने पतियों को प्रेरणा प्रदान की हैय व्यक्तिगत रूप से उन्होंने बड़े व्यापार और वाणिज्य को स्वतंत्र रूप से प्रबंधित किया है। जैन जीवन पद्धति में, महिला हमेशा अपनी पवित्रता की रक्षा करने और दुश्मन को हराने के लिए पर्याप्त साहसी रही है। उनकी शिक्षा को हमेशा हर जगह सम्मान दिया गया है। साध्वियों ने आध्यात्मिक प्रगति की अंतिम उपलब्धि से संबंधित मामलों में समाज के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है। महिलाओं की मुक्ति, महिलाओं की स्वतंत्रता और महिलाओं की उन्नति जैन धर्म में एकीकृत हैं। ये सिद्धांत आने वाले दशकों में महिलाओं की स्वतंत्रता की प्राप्ति के नए मार्ग की ओर लोगों का मार्गदर्शन और नेतृत्व करने के लिए निश्चित हैं।

निष्कर्ष

जैन धर्म में स्त्री शिक्षा की स्थिति एक उदार और समृद्धि करने वाली है, जो सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से समृद्धि का आधार रखती है। जैन साहित्य और ग्रंथों में स्त्री शिक्षा को लेकर स्पष्ट संकेत हैं कि स्त्रीयों को उच्च शिक्षा और धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति का पूरा अधिकार है। महावीर स्वामी और अन्य तीर्थंकरों के उपदेशों में भी स्त्रीयों को ज्ञान की महत्वपूर्णता का संदेश है, जो समाज में स्त्री शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। स्त्रीयों के लिए धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का महत्वपूर्ण होना, जो उन्हें समझदार, समर्पित, और सकारात्मक समाज के निर्माण में उनके सहयोग के रूप में आत्मनिवृत्ति करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

जैन समुदाय ने एक सामर्थ्यपूर्ण स्त्री शिक्षा के माध्यम से समृद्धि के सूत्र बुने हैं, जो नारी समाज की सकारात्मक स्थिति में सुधार करने का कारण बन सकते हैं। इस सामर्थ्यपूर्ण परिवर्तन के साथ, समाज में स्त्रीयों की भूमिका में सुधार होगा, जिससे समृद्धि, सामाजिक न्याय, और धार्मिक साहित्य में एक नया दृष्टिकोण आएगा। इस प्रकार, जैन धर्म में स्त्री शिक्षा की स्थिति एक नये और उत्तेजक समाज की ओर प्रगट हो रही है, जो समृद्धि और सामाजिक समरसता की दिशा में काम कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राधा कृष्णन, सर्वपल्ली (2012), भारतीय दर्शन, दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स, पृ 52.
2. जैन, महावीर सरन, (2010), भगवान महावीर एवं जैन दर्शन, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ–24,52.
3. विद्यालंकार, मनोहर, (1994), वेद प्रदीप नारी तथा वेदाध्य्यन, अंक–3, पृष्ठ 241
4. विद्यालकार मनोहर, (1995), वेद प्रदीप, वेद में नारी का स्थान, अंक 4 पृष्ठ 16
5. पाण्डेय, रामशकल, (2010). विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
6. सरन, महावीर जैन, (2010), भगवान महावीर एवं जैन दर्शन, इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 27,91, 213.

❖◆❖